“MAA” OMWATI COLLEGE OF EDUCATION HASSANPUR (PALWAL)

AFFILIATED CRS UNIVERSITY, JIND

B.ED – 2ND YEAR (2021-22)

NOTES PAPER- IV (A)

LANGUAGE ACROSS THE CURRICULUM

MAA OMWATI EDUCATION TRUST

DELHI

E-mail: moce.principal@maaomwati.com

LANGUAGE ACROSS CURRICULAM :-

Page
Date

Introduction to language across the Curriculum Approach :-

Paper - 4 (A)
(Manveer Singh)

UNIT - 01

(1) Meaning, Need and Benefit of Language Across Curriculum :-

Introduction :- किसी भी विषय को समझने के लिए तथा आमतौर पर आपस में बातचीत करने के लिए भी हमें भाषा की जरूरत पड़ती है। भाषा का ज्ञान होना हर विद्यार्थी तथा व्यक्ति के लिए आवश्यक है। भाषा के द्वारा ही मनुष्य आपस में बातचीत कर पाते हैं तथा जानवरों की भी अपनी भाषा होती है, जिसके द्वारा वो भी एक-दूसरे से बातचीत करते हैं तथा एक-दूसरे के भावों, विचारों को समझते हैं।

प्रारंभिक भाषा का विकास तो उसके क्षेत्र पर परिवार तथा समाज के द्वारा हो जाता है लेकिन द्वितीय (Secondary) भाषा का विकास उसके विद्यालय में उसके अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है।

द्वितीय भाषा का विकास करने के लिए विद्यालय में अध्यापकों के द्वारा पाठ्यक्रम के तहत भाषा का विकास किया गया है जिससे बच्चों में विषय-वस्तु के साथ-2 भाषा का ज्ञान भी दिया जाता है।

भाषा की परिभाषा तथा अर्थ :-
भाषा से अभिप्राय है ऐसा संकाय जो लोगों को अपना को दार्शनिक रूप में एक-दूसरे के साथ साझा करने में सहायता करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

भाषा लोगों को एक दूसरे के साथ विचारों का आदान - प्रदान करने में सहायता करती है। विचारों का आदान - प्रदान भाषा को लिखकर, बोलकर तथा गाकर करके हो सकता है।

भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है और सम्प्रेषण हमेशा सामाजिक संदर्भ में ही होता है।

भाषा की विशेषताएँ :-

1.) भाषा प्रतीकों की प्रणाली
2.) भाषा आपसी वार्तालाप में आवश्यक है।
3.) भाषा सीखी जाती है।
4.) भाषा सृजनात्मक है।
5.) भाषा समय के अनुसार बदलती रहती है।
6.) भाषा के प्रतीकों को एक समय में एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं।
7.) भाषा में विभिन्नता होती है।
8.) भाषा एक सांझे सांस्कृतिक अनुभव पर आधारित होती है।
9.) भाषा के प्रतीक मनमाने हैं।
10.) भाषा के नए प्रतीक और संकेत बनाने की प्रेरणा देती है।

पाठ्यक्रम के तहत भाषा की अवधारणा

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page ____
Date ____

Language Across Curriculum

(पाठ्यक्रम के तहत भाषा :-)

Meaning :-
LAC का अर्थ :-

पाठ्यक्रम के तहत भाषा को English में Language Across Curriculum कहते हैं। Language Across Curriculum तीन शब्दों से मिलकर बना है :- Language + Across + Curriculum.

→ Language का मतलब - भाषा
Across का मतलब - Through out
Curriculum का मतलब - पाठ्यक्रम

CONCEPT OF LAC :-

* पाठ्यक्रम के तहत भाषा की अवधारणा से अभिप्राय है स्कूल के सभी विषयों को भाषा के विषय के रूप में पढ़ाना।

पाठ्यक्रम के तहत भाषा एक पाठ्यक्रम आगम है जिसके द्वारा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की सहायता बच्चों में भाषा का विकास किया जाता है। बच्चों में भाषा का विकास करने के लिए विद्यालय में विषय-वस्तु तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ सब अंग्रेजी भाषा में की जाती हैं।

Example :- हमने सुना है कि English Medium School. इसका मतलब है "English Across Curriculum". इसका अर्थ है उस विद्यालय में सभी विषय-वस्तु English भाषा में होगी, English Language Subject के अलावा दूसरे Subject भी English

Page
Date

में होंगे। जैसे - गणित, सामाजिक विज्ञान तथा विज्ञान आदि विषयों को भी English भाषा में ही पढ़ाया जाता है तथा अशैक्षिक गतिविधियाँ भी English भाषा में ही होती हैं। जिससे बच्चों में English भाषा का सम्पूर्ण विकास किया जा सके। इसी को "पाठ्यक्रम के तहत भाषा" (LAC) कहते हैं।

पाठ्यक्रम के तहत भाषा की अवधारणा के तीन मुख्य सिद्धांत हैं :-

1. भाषा का विकास व इसके उद्देश्य पूर्ण प्रयोग से संभव है।
2. अधिगम भाषा के माध्यम से बोलकर या लिखकर होता है।
3. भाषा क्रियात्मक विकास में अहम है।

प्रारंभिक स्तर पर विषय कुछ भी हो उनके Concept को भाषा के माध्यम से ही जोड़ा जाता है। भाषा के द्वारा नए ज्ञान को पुराने ज्ञान के साथ जोड़ सकता है तथा उस पर विचार, चिंतन कर सकता है।

पाठ्यक्रम के तहत भाषा में हम भाषा के साथ-2 विषय-वस्तु को भी समझते हैं तथा ये कह सकते हैं कि विषय-वस्तु का ज्ञान भाषा के माध्यम से ही कराया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Need of language across Curriculum:-

पाठ्यक्रम के तहत भाषा का मतलब है कि विद्यालय में जो भी शैक्षिक तथा अशैक्षिक गतिविधियों का एक भाषा में होना। वो भाषा कुछ भी हो सकती- जैसे Hindi, English, Urdu etc.

Language across Curriculum Approach एक भाषा और विषय वस्तु दोनों को समग्र रूप से सिखने के लिए आग्रह करता है या ऐसा कहा जाए कि LAC की अवधारणा / उपागम भाषा तथा विषय-वस्तु को एक करता है। LAC की अवधारणा यह संज्ञान देती है कि भाषा शिक्षा अलग से कक्षा का रूप नहीं ले सकती है। LAC यह सिफारिश करता है कि भाषा प्रत्येक विषय में विद्यमान है।

LAC की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि -

1. भाषा के तहत ही हम Content बनाते है।
2. विषय- वस्तु का निर्माण करते है।
3. इसके विभिन्न अर्थ करते है।

सभी विषयों का अधिगम भाषा पर ही निर्भर है। भाषा और वस्तु दोनों एक-दूसरे से संबंधित है।

छात्र भाषा के द्वारा ही विषय को पढ़ता है। आत्मसात करता है तथा नए सम्प्रत्यों को भाषा से ही सिखता है। जब एक भाषायी कक्षा के अलावा छात्र सुनता, बोलता, पढ़ता तथा फिर लिखता है। तब वह भाषा का विषय को सीखने में प्रयोग करता है। इस प्रक्रिया के तहत जब छात्र नए-२ Concept को हासिल करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

तब उसके साथ-२ ही अपने भाषाई कौशलों को विकसित करता है। इसलिए कहा जाता है कि शिक्षा के सभी क्षेत्र में भाषा और विषय-वस्तु को समग्र रूप से पढ़ने की आवश्यकता है जिसे हम LAC कहते है

Benefit of Language Across Curriculum:-

पाठ्यक्रम के तहत भाषा कौशल के उपयोग पाठ्यक्रम को समझने के साथ-२ भाषायी कौशल के विकास करने से भी संबंधित है। शिक्षा, छात्र तथा अध्यापक सभी को LAC Approach का लाभ होता है।

पाठ्यक्रम के तहत भाषा उपागम का छात्रों के लिए उपयोगिता इस प्रकार है-

1. यह उपागम छात्रों के सम्प्रेषण कौशल (Communication skill) को विकसित करता है।
2. यह उपागम छात्रों को विषय-वस्तु को विस्तृत रूप से समझने में मदद करता है।
3. यह उपागम कि छात्रों के मस्तिष्क में नए विचारों की उत्पत्ति में मदद करता है।
4. यह उपागम विदेशी भाषाओं में विभिन्न विषयों पर वार्तालाप करने में मदद करता है।
5. यह छात्रों में विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश में मदद करता है।
6. यह उपागम छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करता है तथा वे प्रभावी ढंग से स्वाध्याय कर सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

(7) LAC Approach के द्वारा बच्चों के सामने बहुत सारे Career option हो जाते हैं। जिससे वह आसानी से अपना भविष्य बना सकते।

(8) LAC के द्वारा बच्चों का व्यक्तित्व का विकास होता है।

(9) बच्चों में किसी भी तरह की झिझक की भावना नहीं रहती है।

(10) LAC Approach के द्वारा बच्चे विभिन्न प्रकार के नए-२ शब्दों को सीखते हैं।

(11) बच्चों में आत्मविश्वास का विकास होता है।

Problems in Language Across Curriculum:-

पाठ्यक्रम के तहत भाषा अपागम के बहुत सारे मायने हैं। इससे बच्चों की रटने की प्रवृत्ति खत्म हो जाएगी। इसके लिए बच्चों को विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए अवसर देने चाहिए।

लेकिन इसके तहत आने वाली परेशानी भी बहुत है। इस प्रकार है-

(1) शिक्षकों का नकारात्मक दृष्टिकोण :- सबसे पहले तो भाषा का ज्ञान देना केवल भाषा शिक्षक ही नहीं बल्कि सभी शिक्षकों की जिम्मेदारी होती है चाहे विषय कोई भी हो। Eg: Maths and Social Science अध्यापक को भी विषय को पढ़ाते समय भाषा का ज्ञान कराना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

(2) विद्यार्थी का दृष्टिकोण :- विद्यार्थी भी केवल विषय-वस्तु को ध्यान से समझता है। जैसे Maths को पढ़ते समय वो केवल formula को याद करने पर ध्यान देता है। sums को हल करता, भाषा को भूल ही जाता है।

(3) भाषा को एक माध्यम भर समझना :- अध्यापक भाषा को पढ़ाने का एक माध्यम की तरह देखते हैं। जैसे- एक S.S.t अध्यापक केवल बच्चे की विषय वस्तु को जांचता है वह भाषा की लिखाई तथा व्याकरणीय गलतियों की तरफ ध्यान देता।

(4) एक भाषा का विकास करने लिए अध्यापक तथा विद्यार्थी के बीच में वार्तालाप उसी भाषा में होना चाहिए जिसको विकसित करना चाहते हैं परन्तु ऐसा होता नहीं है।

(5) पाठ्यक्रम के तहत भाषा को लागू तो किया जाता है परन्तु उन पर काम नहीं किया जाता।

निष्कर्ष :-
पाठ्यक्रम के तहत भाषा के द्वारा बच्चों का Content learning के साथ-2 Language Learning भी होती है जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो जाता है और बच्चे अपने विषय के प्रति और अधिक रुचि लेने लगते हैं। LAC Approach के द्वारा बच्चों के अंदर भाषा का विकास पूरी तरह हो जाता है और अपना एक उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए समर्थ हो जाता है।

Page
Date

Function of language in Classroom:-

[कक्षा - कक्ष अधिगम में भाषा के कार्य]

Introduction:- प्रकृति ने केवल मानव को ही भाषा का वरदान दिया है। पशुओं और मनुष्य में एक महत्वपूर्ण अंतर उनकी भाषा है। पशु भी आपस में बातचीत करते हैं लेकिन मनुष्य अभी तक उनकी भाषा तक पहुंचा नहीं है। प्रकृति ने मनुष्य को भाषा का वरदान देकर अपनी बात, अपने विचारों तथा भावनाओं को प्रकट करने में समर्थ बनाया है।

मनुष्य के लिए भाषा सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है तथा भाषा ने हमारी जिन्दगी को आसान तथा सरल बना दिया है। भाषा के द्वारा व्यक्ति का व्यक्तित्व का विकास होता है।

कक्षा - कक्ष में भी भाषा की सबसे बड़ी भूमिका है क्योंकि इसके द्वारा ही विद्यार्थी और शिक्षक के बीच में आपसी अंतःक्रिया मुमकिन है। इसके द्वारा बहुत सारे कार्य किए जाते हैं।

Function of language in Classroom:-

कक्षा - कक्ष में विद्यार्थी और अध्यापक के बीच में भाषा की भूमिका इस प्रकार है -

① Expressive and Communicate Related function:- (अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण से संबंधित कार्य) →

कक्षा - कक्ष में विद्यार्थी को विचारों, भावों, बातों को बताने तथा व्यक्त करने के लिए भाषा की जरूरत होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

तथा बच्चों और अध्यापक को आपस में बातचीत करने में भाषा की आवश्यकता है।

(2) Language as medium to provide Knowledge :-
(ज्ञान को देने के लिए भाषा एक साधन की तरह कार्य) :-
कक्षा-कक्ष में अध्यापक को अपना विषय पढ़ाने के लिए भाषा की जरूरत होती है बिना भाषा के अध्यापक का ज्ञान व्यर्थ हो जाता है।

(3) Interpretative function (व्याख्या संबंधी कार्य) :-
कक्षा-कक्ष में अध्यापक को विषय-वस्तु को समझाने के लिए उसकी व्याख्या करनी पड़ती है उसके लिए भी अध्यापक को भाषा की आवश्यकता है।

(4) Control function (नियंत्रण संबंधी कार्य) :- कक्षा-कक्ष में अनुशासन को बनाए रखने के लिए विद्यार्थी को नियंत्रण में रखना पड़ता। उसके लिए अध्यापक द्वारा बच्चों डाँटना, समझाना, गुस्से वाले भावों आदि को प्रकट करने के लिए भाषा का सहारा लिया जाता है।

(5) Function Related to Remembering and thinking :-
कक्षा में बच्चों के द्वारा सोचना, समझना, चिंतन करना तथा किसी विषय-वस्तु को याद रखने में भी भाषा की आवश्यकता होती है। बिना भाषा के व्यक्ति या बच्चे कुछ भी नहीं कर सकते।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

(6) Social function of language :- बच्चों को समाज में आपस में बात करने के लिए भी भाषा की जरूरत है। भाषा के द्वारा बच्चे आपसी बातचीत को आसानी से कर सकते हैं

(7) Creative function (सृजनात्मक / रचनात्मक संबंधी कार्य) :- बच्चों के अंदर छिपी हुई प्रतिभाओं तथा सृजनात्मक क्रियाओं का विकास करने के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है क्योंकि भाषा के माध्यम से बच्चा किसी भी चीज के बारे चिंतन, तर्क, आदि करके उनको बाहर निकालता है

(8) Heuristic function :- यह कार्य बालक के वातावरण से है। बालक वातावरण में रहकर वास्तविकता को पाता है तथा खोजपूर्ण कार्य करता है। बच्चा जब क्यों शब्द का प्रयोग करने लगता है तो वह भाषा का Heuristic कार्य है

(9) Informational function :- इसके द्वारा बालक अपनी सूचना को दूसरे के साथ बाँटता है तथा दूसरे से नई सूचनाओं को सीखता है

(10) Expression of Ideas :- मनुष्य पशुओं से अलग होता है क्योंकि बुद्धि के द्वारा वो सारे काम सोच समझकर करता है इसी की वजह से वह पर्यावरण के साथ अनुकूलन करता है

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

function of Language for Teacher and student in classroom :-

a) from Teacher's pt of view :-

(1) यह अध्यापक को बच्चों को ज्ञान देने में सहायता करती है। इसी के माध्यम से अध्यापक अपनी विषय-वस्तु को अच्छे से पढ़ा सकता है।

(2) भाषा अध्यापक को बच्चों के mood को समझने में सहायता करती है तथा फिर अपने अनुसार अध्यापक उसको बदल सकता है।

(3) अध्यापक के पास जो कुछ भी ज्ञान होता है उसको वह भाषा के माध्यम से आसानी से बच्चों को दे सकता है जिससे शिक्षा के उद्देश्य पूर्ण होता है।

(b) from student's pt of view :-

(1) बच्चे अपने प्रश्नों को पूछने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं।

(2) Group work करने में बच्चों को भाषा की जरूरत होती है जिसके द्वारा वह अपने विचारों को दूसरों के साथ बांट सकता है।

(3) भाषा के द्वारा बच्चों को पता चलता है कि अध्यापक क्या पढ़ा रहे हैं।

(4)

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

[Language Discourse in the classroom:-]

(सामान्य कक्षाकक्ष भाषा)

(General classroom Language)

Introduction:- पाठ्यक्रम के तहत भाषा एक ऐसा उपागम है जिसके द्वारा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को एक ही भाषा में पढ़ाया जाता है ताकि बच्चों में उस भाषा का सम्पूर्ण विकास किया जा सके।

कक्षा में विद्यार्थी तथा अध्यापक के बीच संप्रेषण करने के लिए भाषा की ज़रूरत होती है जिसके द्वारा दोनों एक-दूसरे वार्तालाप करते हैं। शिक्षा में भाषा का प्रयोग एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण के लिए करता है। क्योंकि भाषा से अधिक उसके माध्यम से सम्प्रेषण अधिक महत्वपूर्ण है।

भाषा का आधार सम्प्रेषण है क्योंकि सम्प्रेषण के माध्यम से ही भाषा का निर्माण होता है। किसी भी विद्यार्थी की किसी भी विषय में मास्टरी चाहे गणित, विज्ञान या सामाजिक, भाषा पर ही निर्भर है।

भाषा की भूमिका तीन प्रकार के लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है -

1. भाषा विशेषज्ञों के लिए
2. विद्यार्थियों के लिए जिनके लिए भाषा विचारों और अधिगम का माध्यम है।
3. शिक्षकों के लिए भाषा कक्षाकक्ष सम्प्रेषण का माध्यम है।

इसी कक्षा कक्ष की भाषा को सामान्य कक्षा-कक्ष भाषा कहते है जो इस प्रकार है -

Page
Date

(General classroom Language)
(सामान्य कक्षाकक्ष भाषा -)

कक्षा की भाषा एक नियमित भाषा है जिसका उपयोग कक्षा में नियमित रूप से किया जाता है जैसे - प्रशंसा के निर्देश देना ।। अपनी किताबें बाहर ले जाना" या " कृपया बैठ जाओ" ।
यह वह भाषा है जिसका उपयोग शिक्षकों को करने के लिए किया जाता है तथा छात्रों को सुनने के लिए उपयोग किया जाता है। लेकिन किसी भाषा को पढ़ाने में भाषा के इस भाग को सीखने में थोड़ा समय लगता है। इन मूल बातों को जानने के लिए छात्रों को अपनी मातृभाषा का उपयोग करने के लिए मजबूर किया जाता है।
यह भाषा कक्षा के वातावरण को अधिक प्रमाणिक बनाती है।

सामान्य कक्षा-कक्ष भाषा वह भाषा होती है जो कक्षा-कक्ष में सामान्य रूप से प्रयोग की जाती है। सामान्य कक्षा कक्ष भाषा का प्रयोग सभी विषयों के अध्यापकों द्वारा किया जाता है। भाषा ही एकमात्र ऐसा विषय है जो स्कूल के पूरे पाठ्यक्रम में विद्यमान रहती है।

कक्षा की भाषा को पढ़ाना एक चुनौती क्यों है:-

कक्षा की भाषा को एक पाठ में एकीकृत करने का प्रयास करते समय शिक्षक अक्सर कठिनाई महसूस करता है। यह कठिनाई यह होती है कि कई दूसरी भाषा शिक्षकों ने बचपन के बाद दूसरी भाषा सीखी, इसलिए प्रमाणिक कक्षा की भाषा के संपर्क में नहीं।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

अतः शिक्षकों को यह जानने के प्रयास करने चाहिए कि छात्रों के लिए सबसे प्रमाणिक अनुभव बनाने के लिए सही भाषा क्या है। छात्रों को कठिनाई होती है जब लक्ष्य भाषा में फार्म अपनी मातृभाषा में समझ में नहीं आता है।

कक्षा की भाषा कैसे सिखाएँ :-

कक्षा की पढ़ने के दौरान कई रणनीतियाँ होती है जो एक शिक्षक को सीखने की सुविधा के लिए नियोजित कर सकती है। -

(1) अध्यापक के द्वारा पहले छोटे शब्दों जैसे "बैठो" फिर शिक्षक एक लंबी कमांड के लिए प्रगति कर सकता है जैसे "कृपया नीचे बैठो"। तथा फिर वैकल्पिक वैकल्पिक वाक्यांश सीख सकता है जिसका अर्थ समान होता है - एक सीट ले लो।

(2) यह भी सुनिश्चित करें कि यह भाषा किस लिए है उसको बीच में मत छोड़ना क्योंकि जितना आप भाषा का उपयोग करेंगे उसकी भाषा उतनी ही विकासित होगी।

(3) एक बार जब आप अवधारणा दे तो उसका उपयोग भी करे ताकि विद्यार्थी को समझ आए।

(4) ऐसे छोटे २ वाक्य सोच दे ताकि वह इसके आदि हो जाए और दैनिक जीवन में इसका उपयोग करने लगे।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page

Date

Q-1 (i) (5) कक्षा की भाषा को सीखने और याद रखने में छात्रों की मदद करने के लिए भाषा की सीढ़ी तथा संकेतों का उपयोग करें।

कक्षा की भाषा के कुछ उदाहरण :-

(1) प्लीज अन्दर आ जाओ।
(2) क्या मैं शौचालय जा सकता हूँ।
(3) अपनी पुस्तक लाओ।
(4) अपना हाथ बढ़ाएँ।

(Use of General Classroom Language)

सामान्य कक्षा-कक्ष में भाषा का प्रयोग इस प्रकार है -

(1) शाब्दिक सम्प्रेषण (Verbal Communication) :- इस सम्प्रेषण में संदेश को भेजने के लिए भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह मौखिक तथा लिखित दोनों है। बाल्यकाल में बच्चा अपनी भाषा को सीखने के लिए मौखिक भाषा को सुनता है इसके बाद वह बोलना शुरू करता है।

(2) अशाब्दिक सम्प्रेषण :- इसको हम मौन भाषा भी कहते हैं। इसमें शरीर के अंगों द्वारा संकेतों का प्रयोग किया जाता है।

(3) Expressive :- कक्षा में अपनी बात को Express करने के लिए कक्षा-कक्ष की भाषा की जरूरत होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

(4) **Communication:-** कक्षा में बच्चों को अध्यापक से कुछ भी बातचीत करने के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है। सम्प्रेषण के लिए कक्षा कक्ष की भाषा की आवश्यकता होती है।

Effective Communication in classroom:-

(कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण करना)

Methods

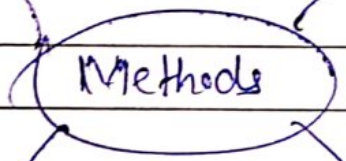

- संदेश को विभिन्न प्रकार से दोहराना
- सम्मानजनक तरीके से सम्प्रेषण करना।
- प्रतिपुष्टि प्राप्त करना
- अशाब्दिक सम्प्रेषण.

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

[[Use Of Literature Across Curriculam]]

(पाठ्यक्रम के तहत साहित्य का प्रयोग)

Introduction:- पाठ्यक्रम के तहत भाषा एक ऐसा उपागम है जिसमें सबसे ज्यादा जोर भाषा के कौशलों को सिखाने, भाषा की महत्वता, जीवन में भाषा का विकास आदि पर दिया है लेकिन इन सब को अच्छी तरह से या पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए हमें उसके साहित्य को जानने, पढ़ने, तथा समझने की जरूरत है।

जब तक हम विषय-वस्तु के पीछे के इतिहास, उसका साहित्य नहीं समझेंगे तब तक विषय-वस्तु को भी नहीं समझ सकते केवल उसको रट सकते हैं। अर्थात अध्यापक को चाहिए कि वह साहित्य के माध्यम से बच्चों में भाषा का विकास करे। तभी हम पाठ्यक्रम के तहत भाषा के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम की गहनता को समझने के लिए ही उसका साहित्य पढ़ने की आवश्यकता है, इसलिए पाठ्यक्रम के तहत भाषा में पाठ्यक्रम के तहत साहित्य के उपयोग, उसकी महत्व आदि को समझाया है। पाठ्यक्रम के तहत साहित्य का वर्णन इस प्रकार है →

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Literature Across Curriculum

(पाठ्यक्रम के तहत साहित्य)—

पाठ्यक्रम के तहत साहित्य को पढ़ने, जानने के लिए हमें सबसे पहले साहित्य तथा पाठ्यक्रम को अलग-2 समझना आवश्यक है—

साहित्य की परिभाषा :- साहित्य का अर्थ होता है- किसी भी शब्द की व्यापक जानकारी होना।

ये एक सांस्कृतिक दस्तावेज होती है जो कि किसी देश या समाज की संस्कृति को समझने में सहायता करती है।

किसी विषय में विषय-वस्तु के इतिहास, उसके क्या, क्यों, कैसे आदि पूरसो को जानना ही उस विषय-वस्तु का साहित्य कहलाता है।

ये मुख्यतः छपी हुई पुस्तकें है, जो कि समाज का आइना होती है। कुछ भाषाविदों का मानना है कि किसी भी पुस्तक का स्वयं का कोई अर्थ तब तक नहीं होता जब तक कि पढ़ने वाला उसका अर्थ नहीं निकालता। एक प्रकार की कला है। पुस्तकें में इसको लिखने वाले की सृजनात्मकता दिखाई देती है।

पाठ्यक्रम की परिभाषा :- पाठ्यक्रम एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ होता है- दौड़ का मैदान। अतः पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ होता है- शिक्षा-सम्बंधी दौड़ का वह मार्ग जिस पर दौड़ कर बालक अपने

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

व्यक्तित्व का विकास के लक्ष्य को प्राप्त करता है।

कनिंघम के अनुसार :- "पाठ्यक्रम कलाकार के हाथों में एक औजार है। जिससे वह अपनी वस्तु को अपने कलाकक्ष में अपने आदर्शों के अनुसार ढालता है।"

<u>पाठ्यक्रम के तहत साहित्य</u> :-

पाठ्यक्रम के तहत भाषा उपागम है जिसमें भाषा को सीखने तथा सिखाने पर जोर दिया है। लेकिन भाषा को सिखाने से पहले उसके साहित्य को समझाना जरूरी है ताकि बच्चा भाषा की महत्वता को समझे और आसानी से अधिगम कर सके।
आर्थात्
विद्यालय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समझाने से पहले इसके पीछे की वजह, जरूरत, उपयोगिता, इतिहास, उत्पत्ति, आदि को समझाना ही पाठ्यक्रम के तहत साहित्य कहलाता है।

पाठ्यक्रम में हर एक विषय तथा उसकी अर्थ का विषयवस्तु सबका एक साहित्य होता है जिसको समझकर, जानकर ही हम सही अर्थों में उस विषयवस्तु को समझ सकते हैं।

Example :- छोटी कक्षा में गणित अध्यापक बच्चों को table रटवाता है। लेकिन अगर बालक को table के प्रयोग, आगे की कक्षाओं में उसकी जरूरत तथा जीवन में जरूरत आदि पता चल जाए तो वह उसको रुचिपूर्ण तथा उत्सुकता पूर्वक होकर सीख सकता है। table केवल एक संख्या को 1 से 10 से गिनती से बार-2 गुणा करना ही होता। इसका ही समझना है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Aim
~~Need~~

Main objective of literature in language class

कक्षा में भाषा को समझने में साहित्य का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है —

(1) विद्यार्थियों के लिए ~~विषय~~ विषयवस्तु के माध्यम से भाषा को सीखने को कार्यपूर्ण बनाने के लिए क्योंकि विद्यालय का पाठ्यक्रम बालकेंद्रित होता है।

(2) बच्चों को किसी भी शब्द तथा विषय की गहन जानकारी देने के लिए।

(3) बच्चों के लिए विषय - वस्तु को समझने में होने वाली कठिनाइयों को आसान करने में।

(4) विषय - वस्तु तथा शब्द की सम्पूर्ण जानकारी देना।

(5) किसी शब्द को एक से अधिक अर्थों में समझने में।

(6) विद्यालय में भाषा के इतिहास तथा जीवन में उपयोग बताकर उसको बढ़ावा देना।

(7) साहित्य बच्चों को प्रेरित करता है। विद्यार्थी साहित्य को पढ़कर वास्तविक ज्ञान को ग्रहण करने की भावना को महसूस करता है।

(8) साहित्य से ही बच्चों में भाषा कौशलों का विकास होता है।

(9) साहित्य से आपसी अंतःक्रिया प्रोत्साहित होती है। साहित्य को पढ़कर बच्चे अपने विचारों को एक दूसरे के सामने अभिव्यक्त करता है।

(10) साहित्य सम्पूर्ण व्यक्ति को शिक्षित बनाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Different Models of teaching literature in class:-
(कक्षा में साहित्य को प्रयोग करने के विभिन्न प्रतिमान) —

कक्षा में साहित्य को प्रयोग करने के कई प्रतिमान प्रचलित हैं। शिक्षक किस प्रकार साहित्य को बच्चों की भाषा का विकास करने के लिए प्रयोग करता है। यह आधारित होता है कि वह किस प्रतिमान का चुनाव करता है—

सांस्कृतिक प्रतिमान (Cultural Model):- इस अभिप्राय है कि पुस्तक उस संस्कृति के बारे में सूचना प्रदान करने का स्त्रोत है जिस संस्कृति की भाषा बच्चों को पढ़ाई जा रही है। इसके माध्यम से साहित्य के सामाजिक, राजनैतिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता चलता है।

Example:- भारतीय हिन्दी साहित्य को पढ़ने पर भारत की सांझी विरासत और आम जीवन के बारे में पता चलता है।

भाषायी प्रतिमान (Language Model):- यह विद्यार्थी केन्द्रित है - जैसे-जैसे अधिगमकर्ता पुस्तक को पढ़ता जाता है, वह यह समझता है कि पुस्तक में भाषा का किस प्रकार प्रयोग हो। और जागरूकता तथा अर्थ को समझने लगता है।

व्यक्तिगत विकास प्रतिमान (Personal growth model):- इसमें विद्यार्थी के द्वारा अधिक से अधिक अपने विचार, भावनाओं, व्यक्तिगत अनुभवों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page

Date

Use of Literature Across Curriculum:-

पाठ्यक्रम के तहत साहित्य के उपयोग इस प्रकार है —

(1) शब्दों के अर्थ को गहराई तक जानने में।

(2) भाषा के कौशलों तथा उपयोगिता को समझने में।

(3) पुस्तक में भाषा का उपयोग किस प्रकार किया गया है इसको समझने में तथा इसके बारे में सोच - विचार करने में।

(4) बच्चों को व्यक्तिगत विकास करने में।

(5) पुस्तकों को पढ़ना बच्चों के लिए Boring होता है। उसको साहित्य रुचिपूर्ण बनाने में सहायता करता है।

(6) साहित्य का उपयोग बच्चों को कक्षा के बाहर के संसार की जानकारी देने में होता।

(7) साहित्य का उपयोग बच्चों में सहयोग की भावना को बढ़ाने में होता है।

(8) साहित्य का उपयोग बच्चों में जागरूकता लाने में होता है। वह भाषा के प्रति जागरूक बनते है।

(9) साहित्य की पुस्तकों को पढ़कर बच्चों में विभिन्न जीवन मूल्यों का विकास होता है।

(10) विषयवस्तु का सम्पूर्ण ज्ञान देने में साहित्य का उपयोग होता है इसी कारण ही हम किसी के इतिहास को जानते है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

(5) साहित्य के द्वारा बच्चों की कल्पनाशक्ति और चिंतन को विकसित किया जाता है।

(6) साहित्य के माध्यम से गणित तथा विज्ञान को रोचक विषय बनाया जा सकता है।

(7) पुस्तकें बच्चों के लिए जरूरी हैं। गणित, विज्ञान, संगीत, सामाजिक अध्ययन आदि को कहानी तथा कविता के माध्यम से पढ़ाकर बच्चों में भाषा का विकास किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Classroom Instruction and Language learning
(कक्षाकक्ष अनुदेशन तथा भाषा अधिगम)

Introduction:- पाठ्यक्रम के तहत भाषा उपागम में भाषा पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है। इस उपागम में बच्चों के भाषाई विकास को सबसे महत्वपूर्ण माना क्योंकि भाषा के बिना मनुष्य को जानवरों के समान समझा जाता है तथा लोगों में सम्प्रेषण के लिए भाषा ही एकमात्र माध्यम है।

बालक में भाषा का विकास अर्जन तथा अधिगम दोनों प्रक्रियाओं के द्वारा होता है तथा भाषा एक जीवन-पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यार्थी जीवन में भाषा का सम्पूर्ण विकास होना अनिवार्य है ताकि बच्चा कभी अपने जीवन में असफल न हो सके। बच्चों में भाषा का सर्वांगीण विकास एक शिक्षक के द्वारा ही विद्यालय में कराया जा सकता है। क्योंकि परिवार तथा आस-पास के समाज के द्वारा सीखी गई भाषा उसकी बोलचाल की भाषा तथा मातृभाषा होती है जिसे वह अर्जित करता है यह जन्म के बाद सीखी गई पहली भाषा होती है।

विद्यालय में एक शिक्षक के द्वारा भाषा को दो माध्यम के द्वारा सिखाता है - (i) कक्षाकक्ष अनुदेशन (ii) भाषा अधिगम।

इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है -

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

defⁿ of Classroom Instruction and Language learning
(कक्षा कक्ष अनुदेशन तथा भाषा अधिगम)

(1) Classroom Instruction (कक्षाकक्ष अनुदेशन):-

अनुदेशन का अर्थ होता है - "किसी काम को करने के लिए दिए गए निर्देश"।

⇛ कक्षाकक्ष अनुदेशन से तात्पर्य है - शिक्षक के द्वारा विद्यालय में पाठ्यपुस्तक के ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए दिए गए निर्देशों को ही कक्षा-कक्ष में अध्यापक का अनुदेशन कहेंगे।

⇛ कक्षा कक्ष में एक शिक्षक के द्वारा विषय-वस्तु के बारे में पूर्वलिखित ज्ञान को दिशा-निर्देश के माध्यम से दोबारा कहना ही अनुदेशन कहलाता है तथा यह प्रक्रिया अध्यापक तथा विद्यार्थी के बीच में कक्षा में होती है इसलिए इसको कक्षाकक्ष अनुदेशन कहते हैं।

⇛ हम यह भी कह सकते हैं - कक्षाकक्ष अनुदेशन वह अनुदेशन होता जो कक्षाकक्ष में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्रदान किया जाता है।

कक्षा कक्ष अनुदेशन की प्रक्रिया विद्यालय में सबसे ज्यादा जरूरी शिक्षक / अध्यापक के लिए होती है क्योंकि कक्षा में अनुदेशन का कार्य शिक्षक तथा छात्र का ही होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

कक्षा में एक शिक्षक के द्वारा अनुदेशन के माध्यम से भाषा को ही सिखाया जाता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक को सर्वोच्च माना गया है।

अनुदेशन का अर्थ इसके नाम से ही पता चलता है अनु = पीछे तथा देशन का मतलब - आगे पहुँचाना अर्थात पीछे कही बात को शिक्षक निर्देशों के माध्यम विद्यार्थी तक पहुँचाता है। इसी को अनुदेशन कहते हैं।

(भाषा अधिगम) Language learning

भाषा अधिगम का अर्थ तथा परिभाषा :-

अधिगम का अर्थ होता है - "सीखना" या "सीख रहा" है।

⇏ भाषा अधिगम का तात्पर्य होता है - अध्यापक के द्वारा भाषा को दिशा-निर्देशों के अनुसार बच्चों तक पहुँचाना तथा बच्चों का उसे अपने जीवन में आत्मसात करना या ग्रहण करना ही भाषा अधिगम कहलाता है।

⇏ अध्यापक के द्वारा सिखाई गई भाषा को विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण करके अपने व्यवहार में परिवर्तन करना ही भाषा अधिगम कहलाता है।

भाषा अधिगम की प्रक्रिया में विद्यालय में विद्यार्थी सर्वोच्च रहता है। अर्थात अधिगम की प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page:
Date:

जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने जीवन में भाषा का सम्पूर्ण विकास कर सकता है। बच्चों में भाषा का आहरण जितना अच्छा होगा या बच्चे जितना विषय-वस्तु को भाषा के माध्यम से ग्रहण करेंगे बच्चा का भाषा का विकास उतना ही अच्छा होगा। इसलिए आहरण हर विद्यार्थी के लिए आवश्यक है ताकि वह अपने जीवन को बेहतर तरीके से जी सके।

अध्यापक तथा छात्रों की भूमिकाएँ

(i) कक्षा-कक्ष अनुदेशन में अध्यापक की भूमिका :-

कक्षा-कक्ष अनुदेशन का कार्य अध्यापक का होती है इसलिए अनुदेशन में सबसे ज्यादा अध्यापक की भूमिका होती है जो इस प्रकार है →

(1) अध्यापक को चाहिए कि वो अपने अनुदेशन को रोचकपूर्ण बनाए।

(2) कक्षा-कक्ष में विषयवस्तु को भाषा के माध्यम से ही सिखाया जाता है।

(3) कक्षा में अलग-2 विषय का अध्यापक अपने विषय की विषयवस्तु को भाषा के द्वारा विद्यार्थी तथा पहुँचाता अर्थात यह कह सकते है विद्यालय में हर एक अध्यापक बच्चों को भाषा ही सिखाता है।

(4) अध्यापक अनुदेशन के लिए अनुदेशनात्मक सामग्री का उपयोग करता है। जिससे बच्चे उसे अच्छी प्रकार से ग्रहण कर सके।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

(5) कक्षा में भाषा शिक्षण बच्चों की रुचि को देखकर कराना चाहिए ताकि बच्चे उस क्रिया-पूर्ण होकर सीख सके तथा जीवन में भी उतारे।

(6) अध्यापक को हमेशा बच्चों को अधिगम के लिए प्रेरित करना चाहिए और उनको उचित अवसर देने चाहिए।

(7) अध्यापक को कक्षा में अपने अनुदेशन को प्रभावशाली तथा बच्चों को अच्छी प्रकार समझ आए उसके लिए नई-नई तकनीकों, दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करते रहना चाहिए।

(8) अनुदेशन को करते समय अध्यापक को शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव करते रहना चाहिए ताकि विद्यार्थी कभी बोर न हो।

(9) कक्षा में अच्छे अनुदेशन के कारण विद्यार्थी के जीवन को बेहतर बना सकता है तथा उनको अच्छे-बुरे की पहचान करवाकर सही दिशा-निर्देश देता है।

(10) सही निर्माण के लिए अच्छे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करने में अध्यापक के कक्षा के अनुदेशन की बहुत भूमिका है।

(11) अध्यापक अनुदेशन के द्वारा बच्चों को समाज में तालमेल करना सिखाता है।

(12) अनुदेशन के दौरान अध्यापक को यह जाँचना रहना चाहिए कि बच्चे भलीभांति सीख रहे है या नहीं।

(13) अध्यापक को कक्षा में शिक्षण को सिखाने के लिए अनुदेशन को खेल विधि से करवाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

भाषा अधिगम में विद्यार्थी की भूमिका :-

भाषा अधिगम बच्चों के लिए होती है इसलिए इसमें उसकी भूमिका इस प्रकार है :—

1. अध्यापक द्वारा सिखाए गए अनुदेशन में बच्चों को सक्रिय भूमिका चाहिए।
2. विद्यार्थी को हमेशा नए-2 शब्दों तथा भाषाई ज्ञान को सीखने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।
3. विद्यार्थी सीखे-गए शब्दों या भाषा ज्ञान में अपने जीवन में आत्मसात तथा ग्रहण करता है।
4. विद्यार्थी भाषाई ज्ञान को अधिगम करके जीवन में अपने व्यवहार में भी परिवर्तन लाता है।
5. भाषा को विकास होने से बच्चे में सामाजिक अंतः क्रिया का विकास भी होने जाता है।
6. भाषा की अधिगम के द्वारा बच्चों को सम्प्रेषण करने में कोई परेशानी नहीं होती है।
7. बच्चों में आत्मबल का विकास आसानी से हो जाता है।
8. अध्यापक द्वारा कक्षा में विषय-वस्तु का अनुदेशन के दौरान विद्यार्थी ध्यान-पूर्वक सुनता।
9. बच्चों में सीखने के प्रति जागरूकता का विकास होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

(कक्षाकक्ष अनुदेशन के तरीके / विधियाँ)
(Method of Classroom Instruction.)

अध्यापक के द्वारा कक्षा में अनुदेशन को प्रभावशाली तथा रुचिपूर्ण बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीके, method तथा विधियों का प्रयोग करना चाहिए, इस प्रकार है —

1. व्याख्यान विधि के द्वारा (Explaination) [Hindi teacher के द्वारा]
2. प्रयोगात्मक विधि द्वारा (Experimental)
3. Live Example के through
4. By Blackboard method [Maths, Science Teacher]
5. By lecture Method
6. प्रश्नोत्तर विधि द्वारा
7. By Demostraction Method
8. दृष्टांत विधि द्वारा [Hindi, S.St, teacher]
9. Inductive / Deductive method. [Sci, maths]
10.

इन सभी विधियों के प्रयोग से कक्षाकक्ष के अनुदेशन को दिन-प्रतिदिन बेहतर बना सकते है तथा बच्चों की रुचि भी बनी तथा भाषा का अधिगम अच्छी प्रकार से होगा।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page ____
Date ____

भाषा शिक्षण में अनुदेशात्मक सामग्री की आवश्यकता तथा महत्व :-

अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही अपने अनुदेशन तथा अधिगम को कांतिपूर्ण बनाने के लिए अनुदेशात्मक सामग्री का प्रयोग करते हैं इसका महत्व तथा आवश्यकता इस प्रकार है—

1. प्रत्यक्ष अनुभव की प्राप्ति
2. ज्ञानेन्द्रियों का प्रभावशाली उपयोग
3. रुचि तथा एकाग्रता में वृद्धि
4. भाषा के कौशलों का विकास
5. कक्षा में अनुशासन की स्थापना
6. शिक्षण सूत्रों का व्यावहारिक उपयोग
7. विषय-वस्तु की बोधगम्यता

Conclusion:-

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं बच्चों में भाषाई विकास के लिए कक्षाकक्ष अनुदेशन तथा अधिगम दोनों को रोचक बनाना जरूरी है इससे ही भाषा का विकास अच्छी तरह किया जाता है तथा अध्यापक अनुदेशन के माध्यम से जो भी पढ़ाता है वह उसके साथ-२ भाषा को भी सिखाता है क्योंकि भाषा को सिखाना केवल भाषा अध्यापक की जिम्मेदारी नहीं है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Role of Questioning and Discussion in the Classroom :-

[कक्षा कक्ष में प्रश्न - कौशल तथा विचार - विमर्श का महत्व]

Introduction:- "पाठ्यक्रम के तहत भाषा" एक उपागम है जिसका मुख्य उद्देश्य कक्षा - कक्ष में भाषा का विकास करना। ताकि बच्चों में भाषा संबंधी कौशलों का विकास पूरी तरह से किया जा सके।

बच्चों में भाषा संबंधी कौशलों का विकास करने के लिए अध्यापक बहुत शिक्षण प्रक्रियों तथा शिक्षण - विधि का प्रयोग करता है। उन्हीं में से एक महत्वपूर्ण विधि है - "प्रश्न - कौशल" तथा "विचार - विमर्श"। इन दोनों विधियों का प्रयोग प्राचीन काल से चला आ रहा है और आज भी यह सबसे महत्वपूर्ण विधि मानी जाती है अर्थात: शिक्षा देने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम ही प्रश्न - करना।

इससे शिक्षक विद्यार्थियों के सम्पर्क में आकर उनके ज्ञान का वर्द्धन करता रहता है तथा भाषा का सम्पूर्ण विकास भी बच्चों में हो जाता है। कक्षाकक्ष में भाषा की व्याख्या तथा विकास करने में, सबसे बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका इन दोनों विधियों की ही होती है।

"प्रश्न - कौशल" तथा "विचार - विमर्श" का कक्षाकक्ष में भूमिका, उद्देश्य तथा फायदे आदि का वर्णन इस प्रकार —

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Role of Questioning (प्रश्न - कौशल)

प्रश्न - कौशल (Role of Questioning) :-

प्रश्न पूछना या प्रश्न - करना एक कला होती है। जो कि एक निश्चित सीमा तक शिक्षक की भूमिका, कुशलता तथा योग्यता पर निर्भर होती है। प्रत्येक शिक्षक प्रश्नकर्ता होता है लेकिन प्रत्येक शिक्षक प्रश्न - पूछने की कला में निपुण नहीं होता है। इसलिए प्रत्येक शिक्षक को इस कला में निपुण होना चाहिए।

बार्कर महोदय - "आदत कौशल के स्तर के बाहर सारी शैक्षिक क्रिया की चाबी प्रश्न ही है।"

Objective of Role of Questioning :-

कक्षा - कक्ष में प्रश्न - कौशल का लक्ष्य तथा उद्देश्य पहले से निर्धारित होते हैं - जो इस प्रकार हैं -

1. ज्ञान की परीक्षा लेना
2. कठिनाइओं को जानना
3. ज्ञान का प्रयोग
4. अनुशासन को बनाए रखना
5. चिंतन, तर्क, विवेक आदि का विकास करना।
6. छात्रों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना।
7. विषय - वस्तु को प्रस्तुत करने में।
8. बच्चों को ध्यानकेंद्रित करने में।
9. मूल्यांकन में।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Characteristic of Role of Questioning :-

कक्षा-कक्ष में प्रश्न-पूछने तथा प्रश्न-कौशल की विशेषताएँ इस प्रकार हैं।-

(1) कक्षा में पूछे गए प्रश्न बच्चों के स्तर के अनुसार होने चाहिए।

(2) अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्न पढ़ाये जाने वाली विषय-वस्तु से संबंधित होने चाहिए।

(3) प्रश्न-पूछने की प्रक्रिया में हर विद्यार्थी पर ध्यान देना चाहिए।

(4) कक्षा में पढ़ाई-जाने वाले बच्चों से ऐसा प्रश्न करने चाहिए ताकि उनका ध्यान केंद्रित किया जा सके।

(5) बच्चों द्वारा पूछे-गए प्रश्नों का उत्तर देना अध्यापक का कर्त्तव्य होना चाहिए।

(6) बच्चों के प्रश्नों की जिज्ञासा को दूर करना चाहिए।

(7) विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने से पहले ज्यादा प्रश्न नहीं करने चाहिए।

(8) मूल्यांकन करते समय हर विद्यार्थी को ध्यान में रखकर प्रश्न करने चाहिए।

(9) प्रश्न-कौशल में अध्यापक का बच्चों के साथ प्यार से पेश आना चाहिए न कि गुस्से।

(10) कक्षा में हर विद्यार्थी को प्रश्न-पूछने का मौका मिलना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Importance and Role of Questioning in classroom:-
प्रश्न - कौशल का महत्व

(1) प्रश्न - पूछने से बच्चों के अन्दर की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है।
(2) प्रश्न - पूछने से बच्चों की ज्यादा - जानने की इच्छा पूरी हो जाती है।
(3) इससे छात्रों की कल्पना, चिंतन - शक्ति तथा विकास होने के साथ-2 भावों को अभिव्यक्ति करने की निपुणता भी बढ़ जाती है।
(4) विद्यार्थी के श्रम को अपनी तरफ करने में।
(5) विषय - वस्तु में रोचकता प्रदान करने में प्रश्न - कौशल का प्रयोग होता है।
(6) पाठ्य - सामग्री के अनुरूप प्रश्न करने से छात्रों को पाठ समझने में सुविधा होती है।
(7) शिक्षण के दौरान प्रश्न करने से पता चलता है कि बच्चों को कितना समझ आया है।
(8) विद्यार्थी प्रत्येक वाक्य को एकाग्रचित्त होकर सुनते हैं ताकि समय आने पर प्रश्नों के उत्तर दे सकें।
(9) उचित तथा खोजपूर्ण प्रश्न करने से अध्यापक की कल्पना - शक्ति का विकास होता है।
(10) कक्षा में अनुशासन बना रहता है।
(11) कक्षा में अध्यापक तथा विद्यार्थी के बीच प्रश्न - कौशल करने से कक्षा का माहौल अच्छा बना रहता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Step of Questioning प्रश्न-कौशल के सोपान →

1. उद्बोधन
2. अधिक सूचना प्राप्ति
3. पुनः केन्द्रीयकरण
4. पुनः निर्देशन
5. आलोचनात्मक जागरूकता में वृद्धि

(1) **उद्बोधन :-** जब विद्यार्थी किसी प्रश्न का उत्तर न दे पाए तो, अध्यापक उसको संकेतों के माध्यम से बताकर उसको प्रेरित करता है, उद्बोधन कहलाता है।

(2) **अधिक-सूचना प्राप्ति :-** जब विद्यार्थी किसी विषय-सामग्री संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने लगता है तो अध्यापक उससे और अधिक प्रश्न करने लगता है जिससे उसकी ज्ञान का स्तर बढ़ने लगे।

(3) **पुनः केन्द्रीयकरण :-** इसमें बच्चों द्वारा दिए गए उत्तरों की पुष्टि करना इसका उद्देश्य होता है। इससे छात्रों के उत्तरों का महत्व का बोध होता

(4) **पुनः निर्देशन :-** इसमें एक प्रश्न को अलग-अलग छात्रों से पूछा जाता है। सही उत्तर देने वाले की तरफ इशारा करके न देने वाले बच्चों को निर्देश देता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

Discussion in the classroom –
(कक्षाकक्ष में वाद-विवाद)

कक्षा में बच्चों को विषय-वस्तु को पूर्णतः समझने के लिए बच्चों को आपस में वाद-विवाद करने का मौका देना चाहिए इससे बच्चों में भाषा का विकास होता है। तथा ज्ञान भी स्थाई हो जाता है।

James. M. Lee :- विचार-विमर्श एक सामूहिक शिक्षण प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक तथा छात्र किसी समस्या पर बातचीत करते हैं।

वाद-विवाद का तात्पर्य – किसी विषय-संबंधी Topic पर बच्चों के द्वारा आपस में अपने विचारों का आदान-प्रदान करना भी कक्षा में वाद-विवाद करना ही होता है।

Johnson's View :- विचार-विमर्श विशुद्ध रूप से सामाजिक कार्य है

शिक्षण-विधि को उपयोगी तथा स्थाई बनाने में इस विधि का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण में यह विधि महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसमें अध्यापक और छात्र भी आपस में बातचीत कर सकते हैं तथा दोनों को बराबर का मौका मिलता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page

Date

Characteristic or Nature of Discussion method :-

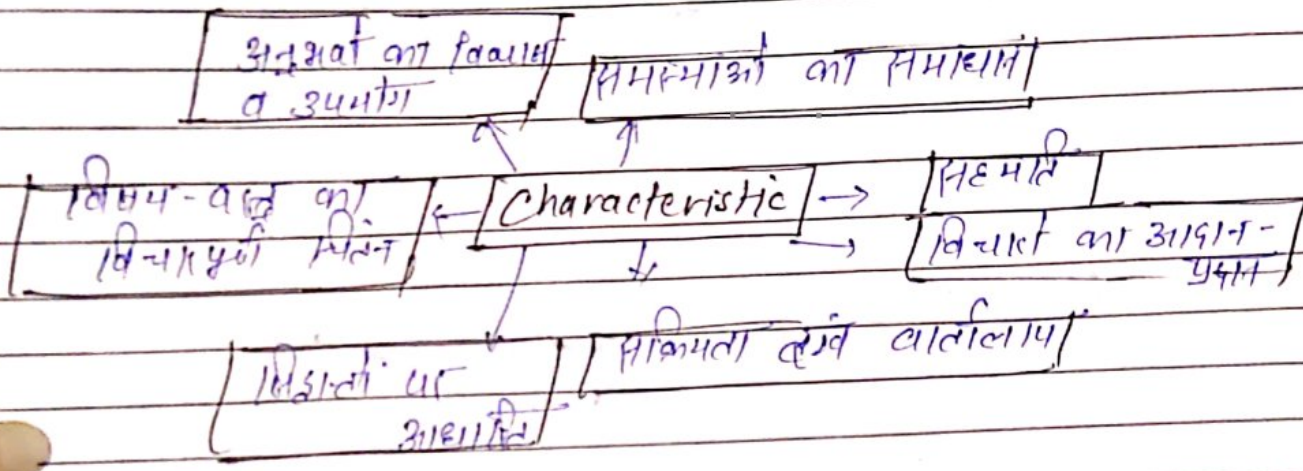

Characteristic
- अनुभवों का विकास व उपयोग
- समस्याओं का समाधान
- सहमति
- विचारों का आदान-प्रदान
- सक्रियता एवं वार्तालाप
- सिद्धांतों पर आधारित
- विषय-वस्तु का विचारपूर्ण चिंतन

Suggestion for Effective Use of Discussion Method:

1. सबके लिए अवसर
2. संकोच रखने वाले बच्चों को प्रोत्साहन
3. महत्व का ज्ञान
4. मित्रवत का और टीम भावना
5. त्रुटियों को दूर करना
6. बच्चों को प्रेरित करना
7. सारांश एवं मूल्यांकन।

वाद-विवाद में अध्यापक का योगदान :-

वाद-विवाद में अध्यापक का महत्वपूर्ण भूमिका होती है बिना अध्यापक के द्वारा प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा नहीं किया जा सकता। अध्यापक का योगदान इस प्रकार है —

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

1. अध्यापक छात्रों का नेता होता है। वो ही इस प्रक्रिया को शुरू करवाता है।

2. अध्यापक ही छात्रों को समस्या प्रदान करता है कि बच्चे अपने-2 विचार प्रस्तुत करते हैं।

3. अध्यापक यह देखता है कि सभी बच्चे भाग ले रहे हैं या नहीं।

4. शर्मीले छात्रों को बोलने के लिए प्रेरित करता।

5. अध्यापक वाद-विवाद में बच्चों के तालमेल पर नजर रखता है।

6. वाद-विवाद में अनुशासन को बनाए रखना का कार्य अध्यापक का होता है।

7. केवल कल्पना-शक्ति, चालाक तथा योग्य अध्यापक ही सही मार्गदर्शन कर सकता है।

8. अध्यापक को बीच-2 में बच्चों सही मार्गदर्शन तथा प्रेरित करना चाहिए।

9. अध्यापक नजर रखता है कि बच्चे आपस में झगड़ा न कर सके।

10. अध्यापक द्वारा महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखना चाहिए तथा बाद में कक्षा के सामने प्रस्तुत करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page

Date

Merit of Group Discussion :-

1. टोली कार्य (Team Work)
2. अज्ञात की खोज
3. समाजिक शक्तियों के विकास के महत्वपूर्ण
4. सहनशीलता का विकास
5. गुणों तथा अच्छी आदतों का विकास
6. लचीली विधि
7. प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान
8. सभी स्तरों के लिए उपयोगी
9. ज्ञान व चिंतन का विकास
10. उद्देश्यों की पूर्ति
11. मनोवैज्ञानिक विधि
12. स्पष्टीकरण

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page

Date

Demerit of Discussion Method

(1) देश की वर्तमान स्थिति में उपयोगी नहीं।

(2) सेकेन्डरी कक्षाओं में उपयोगी नहीं

(3) खर्चीली

(4) लड़ाई - झगड़े का डर रहता है।

(5) समय - शक्ति का व्यय

(6) कुशल अध्यापकों की कमी।

(6) अनुशासन का उल्लंघन

(6) बच्चों में आपसी तालमेल न होना।

निष्कर्ष

विद्यालय में भाषा का पूरी तरह विकास करने में प्रश्न कौशल तथा संवाद - विवाद दोनों प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है, इन प्रक्रिया में अध्यापक तथा छात्रों दोनों की भूमिका होती है तथा विषय सम्बंधी ज्ञान भी स्थाई हो जाता है, बच्चों को पूरा मौका मिलता है तथा विचारों को आपसी में प्रकट करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

अंत: क्रिया के लिए श्रवण तथा मौखिक अभिव्यक्ति :
Listening and Speaking to interact :-

- ↳ Dialogue
- ↳ Story telling
- ↳ Poem Recitation
- ↳ Short Play

Introduction:- किसी से भी अपने विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए हमें बोलने तथा सुनने दोनों कौशलों का ज्ञान होना चाहिए। इन कौशलों की वजह से हम किसी के साथ भी आसानी से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। किसी भी बच्चे में सबसे पहले श्रवण कौशल का ही विकास होता है। जिसे English में Listening कहते हैं। दो वाक्य हैं Listening and Hearing. Listening मतलब किसी भी बातें या ध्वनि (word) अर्थ-पूर्ण तरीके से सुनना। तथा Hearing का मतलब होता है - बिना अर्थ को समझे ही सुनना। जब तक बच्चों में इन दोनों कौशलों का विकास पूरी तरह नहीं होगा तब तक वह पूरी तरह से दूसरे से बातचीत नहीं कर सकता। किसी भी कहानी, संवाद नाटक तथा कविता पठन को समझने के लिए श्रवण तथा मौखिक कौशलों का होना जरूरी है। आपस में वार्तालाप करने के लिए संवाद, कहानी, नाटक तथा कविता पठन का सहारा लेना पड़ता है।

Scanned with CamScanner
Scanned by CamScanner

Page
Date

श्रवण तथा मौखिक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न माध्यम
1. संवाद (3) कविता पठन
2. कहानी कहना (4) नाटक

संवाद (Dialogue)

1. संवाद की परिभाषा :- दो या अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली आपसी बातचीत को संवाद कहते हैं।

OR,

जब दो से अधिक व्यक्तियों में किसी विषय के ऊपर होने वाली चर्चा / बातचीत को भी संवाद कहते हैं।

संवाद करते समय केवल शब्दों पर ही ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि चेहरे के हाव-भाव पर ध्यान दिया जाता है। कई बार हम केवल चेहरे के हाव-भाव से ही बातचीत कर लेते हैं। आपस में बातचीत करने के लिए संवाद का होना आवश्यक है। तथा दो व्यक्तियों के बीच लड़ाई-झगड़ा, प्रेम-घृणा के भाव व्यक्त करने के लिए तथा बातचीत के लिए संवाद की जरूरत है। अच्छे संवाद के द्वारा हम किसी का भी दिल जीत सकते हैं। उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी तथा एकांकी में संवाद का विशेष महत्व है। संवाद के बिना ये सब मुमकिन नहीं है।

संवाद का प्रकार

1. Inner Dialogue:- जो संवाद अपने आप से किए जाते हैं।

Ex- कुछ लोगों को खुद से बात करने की आदत होती है।

Page
Date

Outer Dialogue:-

जो संवाद दूसरे व्यक्ति से किए जाते हैं - Ex - फिल्मों, नाटक आदि में।

संवाद की विशेषताएं :-

(1) छोटे होना चाहिए।
(2) सरल तथा सहज होने चाहिए।
(3) आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए।
(4) संवाद की भाषा आसान तथा भावपूर्ण होनी चाहिए।
(5) संवाद छोटे, सरल तथा विषय के अनुकूल होने चाहिए।
(6) संवाद बनावटी नहीं होने चाहिए।

संवाद का महत्व :-

1. अपने विचारों को प्रकट करने के लिए।
2. आसानी से अपने भावों को प्रकट करने के लिए।
3. दूसरों की बात समझने के लिए।
4. संवाद के द्वारा चेहरे के भावों को पढ़ा जा सकता।
5. आपसी बातचीत के लिए।
6. संवाद के जीवन के किसी महत्वपूर्ण पल को संवाद के द्वारा बताया जा सकता।

संवाद का प्रयोग

1. ↳ नाटक में
2. ↳ फिल्मों में
3. ↳ उपन्यास में
4. ↳ कहानियों में
5. ↳ आपसी वार्तालाप में
6. ↳ भाव प्रकट करने के लिए।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page

Date

कहानी कहना (Story Telling)

कहानी की परिभाषा :-

किसी भी व्यक्ति के वास्तविक जीवन की किसी घटना को नाटकीय रूप में परिवर्तित करके शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाना ही कहानी कहलाता है।

कहानी गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। तथा प्रचलन पुराने समय से चला आ रहा है। लेकिन आधुनिक काल में इसकी लोकप्रियता ज्यादा बढ़ गई है क्योंकि आजकल लोग अपने काम-काज में इतना व्यस्त है कि वो कम समय में ज्यादा शिक्षा तथा मनोरंजन प्राप्त करना चाहते हैं।

कहानियों का प्रचलन हमारे दादी-नानी के काल से भी पहले से चलता आ रहा है। हमने अपने बचपन में दादी-नानी से कहानियाँ सुनी तथा उन्होंने भी अपने दादी-नानी से सुनी होगी। इसलिए हम कह सकते हैं जब से मनुष्य का विकास हुआ है तब से ही कहानियों की उत्पत्ति मानी जाती है।

कहानी कहना का अर्थ :-

कहानी कहने का अर्थ होता है एक अध्यापक के द्वारा किसी कहानी अपने विद्यार्थियों के सामने किस रूप में तथा किस तरह से प्रस्तुत की जाती है उसे ही कहानी कहना कहते हैं।

कहानी को किस तरह से कक्षा में बच्चों के सामने पेश किया जाए इसका ज्ञान एक भाषा अध्यापक को अवश्य होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

9. → मौलिक चिंतन का विकास करना।
10. → समाज कल्याण तथा राष्ट्र हित की भावना का विकास करना।
11. → मनोरंजन की भावना को बढ़ाना।
12. → अपनी बातों को स्वतन्त्रतापूर्वक से प्रकट करने की भावना विकसित करना।
13. → बच्चों में शब्दकोष के ज्ञान को बढ़ाना।
14. → नए-2 विचारों को जाग्रत करना।
15. → अपने जीवन को उद्देश्य पूर्ण बनाने की भावना का विकास करना।

कहानी कहने की विशेषताएँ :-

(1) कहानी बच्चों को ध्यान में रखकर choose करनी चाहिए ताकि उनके ऊपर कोई गलत असर न पड़े।

(2) कहानी कहते समय शिक्षक को अपने expression पर ध्यान देना चाहिए।

3) कहानी ऐसी हो जिससे उनका मौलिक तथा नैतिक विकास हो।

4.) कहानी कहते समय अध्यापक को अपने कहानी के अनुसार अपने हाथों का प्रयोग भी करना चाहिए।

5.) कहानी कहते समय अध्यापक को अपने स्वर के प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए।

6.) कहानी कहने पर विद्यार्थी उसको अच्छे से समझ पाते हैं।

7.) कहानी से मिली शिक्षा हमेशा बच्चों को याद रहती है।

8.) कहानी ऐसे कहनी चाहिए ताकि बच्चों का मनोरंजन भी हो सके।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page
Date

प्राथमिक कक्षाओं में कहानी कहने की उपयोगिता :-

(1) छोटे बच्चों को कहानी के माध्यम से किसी भी बात को अच्छे से समझाया जा सकता है।
(2) बच्चों में पढाई के लिए रुचि पैदा होती है।
(3.) कहानी के माध्यम से पाठ जल्दी याद होता है।
(4) कहानी के द्वारा जल्दी से अच्छी शिक्षा को ग्रहण करता है।
5.) कहानी सुनाते वक्त अध्यापक को कहानी के अनुसार नाटक भी करना चाहिए। ताकि वो चित्र के द्वारा अपने मस्तिष्क में store कर सकें।
6.) अधूरे वाक्यों को पूरा करने वाली क्रियाओं के द्वारा बच्चों का मानसिक विकास होता है।
7.) बच्चा पूरी रुचि के साथ पाठ को ध्यान से पढते हैं।
8.) अध्यापक बीच-२ में प्रश्न पूछकर बच्चों के ज्ञान को check कर सकता है।
9.) बच्चे चित्र के माध्यम से जल्दी ग्रहण करते हैं।
10.) बच्चे जिज्ञासु हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Short Play (लघु नाटक)

लघु नाटक एक छोटा सा नाटक होता है जिसमें एक ही अंक होता है। जिसमें दो-तीन दृश्य होते हैं उसे ही लघु नाटक कहते हैं।

एक बड़े नाटक का संक्षिप्त रूप ही लघु नाटक कहलाता है। एक लघु नाटक बच्चों को अधिक प्रभावित करता है। बच्चे बचपन से ही नकल करने लगते हैं। वो गुड़िया, डॉक्टर, इंजीनियर आदि की नकल करने लगते हैं।

एक नाटक में वाणी, ताल, सुर, लय, संगीत, विचारों आदि का संगम होता है।

Objectives of Short Play :-

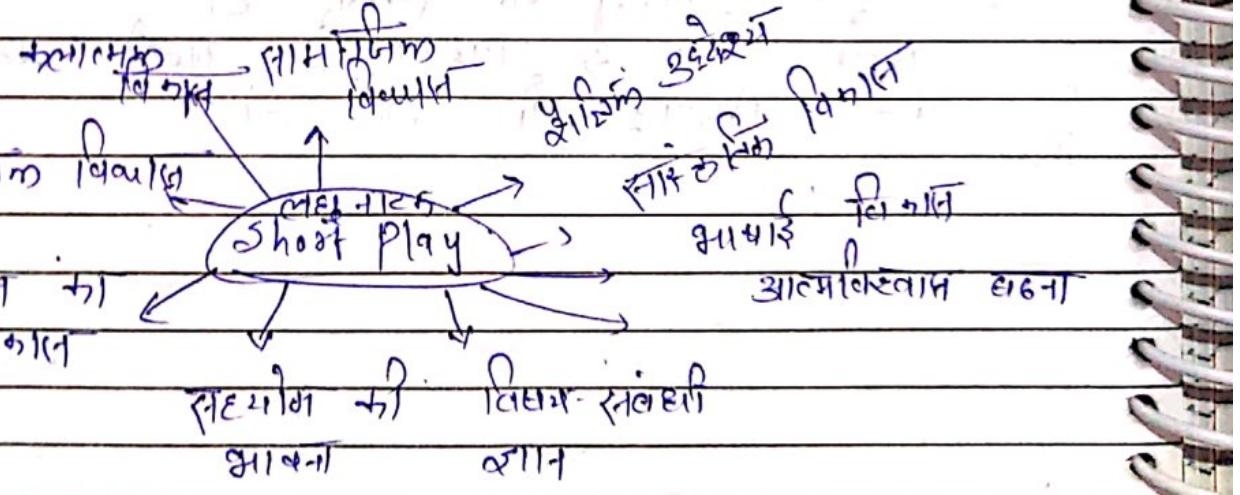

Type of Short Play :-

- → पूर्ण नाटक
- → एक अभिनेता नाटक
- → नृत्य नाटक
- → छाया नाटक
- → Silent नाटक
- → नुक्कड़ नाटक
- → पुतली नाटक
- → हास्य नाटक

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Page:
Date:

Importance of Short Play →

1. मनोरंजन
2. प्राथमिक कक्षा में सहायक
3. नाटक के माध्यम से विषय को समझना आसान है
4. नाटक के द्वारा ज्ञान जल्दी प्राप्त किया जा सकता।
5. बच्चों का चरित्रात्मक विकास
6. भावात्मक विकास
7. सामाजिक विकास
8. नैतिक विकास
9. नाटक के द्वारा इतिहास का दृश्य तथा तिथियों को याद रखना आसान।
10. सहयोग की भावना का विकास किया जाता।
11. नागरिक गुणों का विकास
12. टीमों का प्रशिक्षण
13. खेल द्वारा शिक्षा प्रदान करवाना।

Limitation / Week Pt. of Short Play :-

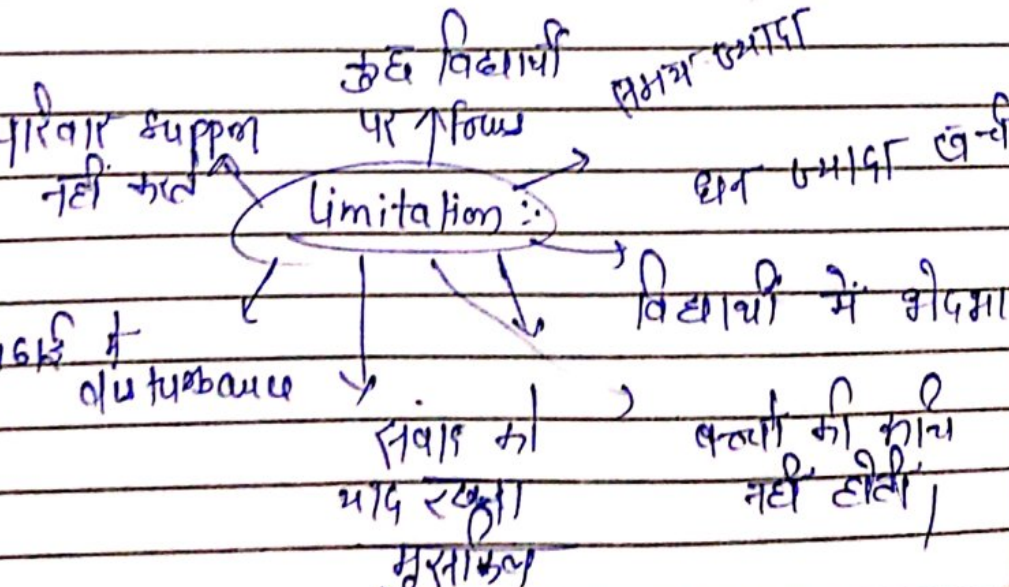

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner